भारतेंदु युगीन कविता की विशेषताएं बताइए।

4. 'बिहारी की कविता में श्रृंगार और भक्ति दोनों का सुंदर समन्वय है' पाठ्यक्रम आधारित दोहों के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

भूषण का साहित्यिक परिचय दीजिए।

5. जयशंकर प्रसाद के गीतों में देश-भक्ति प्रमुख भाव है, 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से.....' के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए। (12)

अथवा

नागार्जुन कृत 'बादल को घिरते देखा है' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए: (6+6+6=18)

(क) संपर्क भाषा के रुप में हिन्दी

(ख) भक्तिकाल

(ग) छायावाद

(घ) प्रयोगवाद

(ङ) समकालीन कविता

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3371 **D**

Unique Paper Code : 2055201001

Name of the Paper : Hindi Bhasha or Sahitya (A) GE

Name of the Course : **B.A. (Prog) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

Ramanujan College Library Kalkaji, New Delhi-110019

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (8+8+8=24)

(क) ऐसे कछु अनुभौ कहत न आवै। साहिब मिले तो को बिलगावै ।।टेक।।

सब में हरि है हरि में सब है, हरि अपनों जिन जाना।

साखी नहीं और कोई दूसर, जाननहार सयाना ।।1.।।

बाजीगर सो राचि रहा, बाजी का मरम न जाना।

बाजी झूठ सांच बाजीगर, जाना मन पतियाना ।।2.।।

अथवा

साजि चतुरंग-सैन अंग मैं उमंग धारि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।

भूषन भनत नाद-बिहद नगारन के नदीनद मद गैबरन के रलत है।

ऐलपैफल खैलभैल खलक में गैलगैल गजन की ठैलपैल सैल उसलत है।

तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि थारा पर पारा पारावार यों हलत है ।।4।।

(ख) कैसा पागलपन है, मैं बेटी को भी कहता हूँ बेटा,

कडुवे मीठे स्वाद विश्व के स्वागत कर, सहता हूँ बेटा,

तुझे बिदाकर एकाकी अपमानित-सा रहता हूँ बेटा,

दो आँसू आ गये, समझता हूँ उनमें बहता हूँ बेटा

अथवा

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती-

अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,

प्रशस्त पुण्य पंथ है- बढ़े चलो-बढ़े चलो!

(ग) मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोय।

जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होय।।

फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु, टुटी लाज की लाव।

अंग-अंग-छवि-झर मैं भयौ भौंर की नाव।।

अथवा

अमल धवलगिरि के शिखरों पर

बादल को घिरते देखा है

छोटे-छोटे मोती जैसे

उसके शीतल तुहिन कणों को

मानसरोवर के उन स्वर्णिम

कमलों पर गिरते देखा है

बादल को घिरते देखा है।।

2. हिन्दी भाषा की विकास-यात्रा पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

राज-भाषा और राष्ट्र-भाषा का अंतर स्पष्ट कीजिए।।

3. रीतिकालीन कविता की सामान्य प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। (12)

अथवा